Amire Ahle Sunnat Se Naam Rakhne Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 227
Weekly Booklet : 227

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का तहरीरी गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से नाम रखने के बारे में सुवाल जवाब

सफ़हात 22

- अच्छा और मुन्फ़रिद नाम रखने का तरीक़ा 01
- रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم के ग़ुलाम की शान 03
- अ़ब्दुल जब्बार व अ़ब्दुर्रहमान को जब्बार व रहमान कहना कैसा ? 08
- बा'ज़ बुज़ुर्गों के अल्क़ाबात बादशाह व शहन्शाह क्यूं ? 15

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُستَطرَف ج ۱ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से नाम रखने के बारे में सुवाल जवाब**

सिने त़बाअ़त : जुमादल ऊला **1443** हि., दिसम्बर **2021** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से नाम रखने के बारे में सुवाल जवाब**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत से नाम रखने के बारे में सुवाल जवाब

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने येह कहा : ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَالْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ''(1) उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। (معجم کبیر، روبفع بن ثابت الانصاری، 5/25، حدیث:4480)

सुवाल : हर शख़्स अपनी औलाद का अच्छा और मुन्फ़रिद नाम रखना चाहता है, इस के लिये क्या त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए ?

जवाब : पहले के दौर में लोग मस्जिद के इमाम साहिबान और उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अपनी औलाद के लिये नाम पूछा करते थे, जब कि आज कल लोगों ने इन्टरनेट (Internet) को अपना ''पीर, राहनुमा और बाबा'' बना लिया है, इस लिये अब सब कुछ ''नेट बाबा'' से पूछा जाता है। दा'वते इस्लामी से पहले की बात है, मेरी इतनी शोहरत नहीं थी, लेकिन दाढ़ी जब से आई थी, रखी हुई थी, उस दौर में आ़म त़ौर पर नौ जवान दाढ़ी नहीं रखते थे, बड़े बूढ़े रख लें तो रख लें। बहर ह़ाल ! एक मस्जिद के क़रीब मुझे एक बच्चा मिला और उस ने कहा : ''मौलाना साहिब ! हमारे घर बच्चा पैदा हुवा है, उस के

1... ऐ **अल्लाह** ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और इन्हें क़ियामत के रोज़ अपनी बारगाह में मुक़र्रब मक़ाम अ़त़ा फ़रमा।

लिये नाम बता दीजिये।'' मैं उस मस्जिद का इमाम नहीं था, लेकिन बच्चे ने मेरा मौलाना वाला हुल्या देख कर मुझ से बच्चे के लिये नाम लिया। तो येह पहले का अन्दाज़ था, आज कल इन्टरनेट मोबाइल फ़ोन ही में मौजूद है, उसी से देख कर नाम रख लिया जाता है और इन्टरनेट पर जो नाम दिये होते हैं उन में से अक्सर नामों का येही मा'ना लिखा होता है, जन्नती फूल या जन्नती महल। ''अगर इन्टरनेट को राहनुमा बनाओगे तो ठोकर खा कर गिर जाओगे, आशिक़ाने रसूल को राहनुमा बनाओ! इस में फ़ाएदा है।'' दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब ''नाम रखने के अहकाम'' में बच्चों और बच्चियों के काफ़ी नाम दिये गए हैं, वहां से देख कर नाम रख लिया जाए, या चाहें तो उस में से चन्द नाम मुन्तख़ब कर लें और फिर उलमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से मश्वरा कर लें कि येह चन्द नाम हम ने निकाले हैं, इन में से कोई नाम आप मुन्तख़ब फ़रमा दीजिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 96)

सुवाल : अगर कोई कहे : ''गुलाम रसूल'' नाम रखना जाइज़ नहीं क्यूं कि हम रसूल के उम्मती हैं, क्या ऐसा कहना जाइज़ है ?

जवाब : ''गुलाम रसूल'' नाम रखना जाइज़ है। आक़ा और गुलाम का दौर बहुत पुराना है पहले के दौर में गुलाम बिकते थे और सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौर में भी बिकते थे, बल्कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी बिकते रहे नीज़ कुरआने पाक में भी गुलामों का ज़िक्र है, इस के इलावा भी कई जगह गुलाम और कनीज़ों का ज़िक्र मिलेगा। बहर हाल येह कैसे मुम्किन है कि आम आदमी का तो गुलाम हो मगर मुस्तफ़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुलाम न हो सकता हो।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम की शान (हिकायत)

हज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللهُ عَنْه सहाबिये रसूल हैं, एक मरतबा अपने क़ाफ़िले से बिछड़ कर जंगल में अकेले रह गए और अपने साथियों को तलाश करने लगे कि अचानक इन के सामने शेर आ गया, इन को शेर से क्या डर लगना था, शेर ख़ुद नबी के इस ग़ुलाम को देख कर कांप उठा ! हज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللهُ عَنْه ने शेर को मुख़ातब कर के कहा : ''يَا اَبَا الْحَارِثِ اَنَا مَوْلٰى رَسُوْلِ اللّٰه'' या'नी ऐ अबुल हारिस ! तुम जानते हो मैं कौन हूं ? मैं रसूलुल्लाह का ग़ुलाम हूं।'' अबुल हारिस शेर की कुन्यत है। उन की येह बात सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा चला, येह उस की तरफ़ से इशारा था कि आप मेरे पीछे पीछे चलें, आप رَضِیَ اللهُ عَنْه उस के पीछे हो लिये तो उस ने आप को बिछड़े हुए साथियों से मिला दिया।

(مصنف عبد الرزاق، 10/233، حدیث:20711) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 97)

उन के जो ग़ुलाम हो गए ख़ल्क़ के इमाम हो गए

सुवाल : कुन्यत का क्या मतलब है ?

जवाब : अस्ल नाम के इलावा वोह नाम जिस से पहले अबू, इब्ने, उम्मे या बिन्ते वग़ैरा मौजूद हो इस को ''कुन्यत'' कहा जाता है। (التعریفات للجرجانی، ص136) जैसे इब्ने हिशाम, उम्मे हानी, बिन्ते ह़व्वा। कुन्यत कभी बाप की निस्बत से रखी जाती है कभी बेटे या बेटी की निस्बत से रखी जाती है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 97)

सुवाल : ''काशान'' और ''बिस्मिल्लाह'' नाम रखना कैसा ?

जवाब : ''काशान'' नाम रखना दुरुस्त है। यूं ही बच्चियों का नाम ''काशाना'' रखा जाता है इस में भी ह़रज नहीं, अलबत्ता नाम रखने में येह बात पेशे नज़र होनी चाहिये कि बच्चों के नाम अम्बियाए किराम

عَلَیۡہِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन رِضۡوَانُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के नामों पर और बच्चियों के नाम सह़ाबियात और वलिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ के नामों पर रखे जाएं ताकि इन की बरकतें नसीब हों।

रही बात "बिस्मिल्लाह" नाम रखने की, कि बा'ज़ लोग बच्चियों के नाम "बिस्मिल्लाह" रखते हैं जिस के मा'ना हैं : "**अल्लाह** के नाम से शुरूअ़" ब ज़ाहिर इस नाम के रखने में भी कोई ह़रज मा'लूम नहीं होता। मसाजिद का नाम भी तो "बिस्मिल्लाह" रखा जाता है। नामों के मुतअ़ल्लिक़ क़ाइ़दा येह है कि अगर किसी नाम का मा'ना मख़्सूस हो तो अब उसे रखना मन्अ़ होता है जैसे "सुब्ह़ान" के मा'ना हैं : "हर ऐ़ब से पाक ज़ात" चूंकि येह वस्फ़ **अल्लाह** पाक के लिये मख़्सूस है लिहाज़ा बन्दे का नाम "सुब्ह़ान" रखना मन्अ़ है अलबत्ता "अ़ब्दुस्सुब्ह़ान" नाम रख सकते हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/159)

सुवाल : क्या किसी मदनी मुन्नी का नाम "शुक्रिय्या" रख सकते हैं ?

जवाब : "शुक्रिय्या" नाम रखने में ह़रज तो नहीं है मगर इस नाम की कोई फ़ज़ीलत भी नहीं है बल्कि हो सकता है कि येह नाम रखने पर लोग मज़ाक़ उड़ाएं और जब येह मदनी मुन्नी बड़ी होगी तो मुम्किन है इस नाम के बाइ़स उसे परेशानी का सामना करना पड़े। ऐसे नाम रखने के बजाए बेहतर येह है कि मदनी मुन्नों के नाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رِضۡوَانُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن और मदनी मुन्नियों के नाम सह़ाबियात और वलिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ के नामों पर रखे जाएं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/147)

सुवाल : लोग नामों को बिगाड़ते हैं इस की क्या वज्ह है ? इस से कैसे बचाया जाए ?

जवाब : नाम इतना मुश्किल रख दिया जाता है कि वोह लोगों की ज़बान पर चढ़ता ही नहीं तो यूं लोग नाम बिगाड़ कर कुछ का कुछ कर डालते हैं। लिहाज़ा नाम को बिगड़ने से बचाने के लिये आसान नाम रखना चाहिये जो आसानी से लोगों की ज़बान पर चढ़ जाए। अगर बरकत के लिये कोई नाम रखा है और वोह मुश्किल है तो उस के साथ आ़म बोलचाल के लिये कोई आसान नाम भी रख लीजिये मसलन अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बहुत प्यारा नाम है, अगर बरकत के लिये येह नाम रख लिया तो लिखत पढ़त के लिये इसे इस्ति'माल करें मगर साथ में कोई और आसान सा नाम भी रख लीजिये जो आ़म आदमी की ज़बान पर आसानी से आ जाए। नाम रखने के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की 179 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "नाम रखने के अह़काम" का मुत़ालआ़ कीजिये। येह बहुत प्यारी किताब है, इस में सेंकड़ों इस्लामी नामों के साथ साथ नाम रखने के मसाइल भी लिखे हुए हैं। इस किताब को मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये या दा'वते इस्लामी की वेबसाइट (www.dawateislamiindia.org) से डाउन लोड कर के इस्तिफ़ादा फ़रमाइये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/76)

सुवाल : क्या बच्ची का नाम सह़ाबिया रखना जाइज़ है ?

जवाब : आज कल Unique (मुन्फ़रिद) नाम रखने का बड़ा जज़्बा है। ह़त्ता कि अगर एक बेटे का नाम इदरीस हो और दूसरे का नाम कोई बता दे कि इब्लीस रख लो तो शायद अनपढ़ क़िस्म के लोग येह नाम रख लें। Unique (मुन्फ़रिद) नाम के शौक़ में उन को समझ ही नहीं पड़ेगी कि इब्लीस किसे कहते हैं ? ह़ालां कि इब्लीस शैत़ान को कहते हैं और येह नाम कोई समझदार रखता भी नहीं। इसी त़रह़ और भी अ़जीबो ग़रीब नाम

लोग रखते हैं। बहर ह़ाल सह़ाबिया नाम रखने के बजाए किसी सह़ाबिया के नाम पर नाम रख लें मसलन आ़इशा सह़ाबिया का नाम है, फ़ातिमा सह़ाबिया का नाम है और इन को येह निस्बत भी ह़ासिल है कि येह सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहज़ादी हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/178)

सुवाल : क्या इन्सान पर नामों के असरात मुरत्तब होते हैं ?

जवाब : जी हां ! इन्सान पर नामों के असरात मुरत्तब होते हैं।

(فیض القدیر، 3/522، تحت حدیث:3745, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/222)

सुवाल : येह ह़क़ीक़त है कि नामों के असरात मुरत्तब होते हैं, अच्छे नामों की बरकतें मिलती हैं और बुरे नामों की ख़राबियां भी सामने आती हैं मगर नामों के हलका और भारी होने की क्या ह़क़ीक़त है ?

जवाब : लोगों में नामों के हलका और भारी होने का तअस्सुर पाया जाता है यहां तक कि किसी ने मुझ से ख़ुसूसी मदनी मुज़ाकरे में इस ह़वाले से सुवाल भी किया था और येह बताया था कि उन के किसी जानने वाले का नाम करबला वालों के नाम पर था तो उन से किसी बाबा जी ने कहा कि करबला वाले तो बहुत बड़ी हस्तियां हैं और तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि उन के नामों पर नाम रखो, लिहाज़ा तुम येह नाम बदल दो क्यूं कि येह नाम बहुत भारी है। मैं ने सुवाल करने वाले को समझाते हुए कहा : अगर करबला वालों के नामों की बरकतें नहीं मिलेंगी तो फिर किन लोगों के नामों की बरकतें मिलेंगी ? नाम भारी है इस लिये उसे बदल दिया जाए तो नाम बदलने की येह वज्ह मेरी समझ में नहीं आती। अगर इस निय्यत से अपने बच्चों के नाम सह़ाबए किराम व औलियाए इ़ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नामों पर रखें कि बरकत ह़ासिल होगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه इन की बरकतें

हासिल होंगी। याद रखिये ! बुरे नाम बुरा फल लाएंगे। बुरे नाम रखने से नुक़्सान होता है और इन की वज्ह से बच्चों के अख़्लाक़ बुरे हो सकते हैं मगर आज कल लोग Unique (मुन्फ़रिद) नाम की हिर्स में अपने बच्चों के अ़जीबो ग़रीब नाम रख रहे होते हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/223)

सुवाल : आप ने अपने रिसाले "ज़ियाए दुरूदो सलाम" का नाम "ज़ियाए दुरूदो सलाम" क्यूं रखा ?

जवाब : ज़िया के मा'ना "रोशनी" है तो "ज़ियाए दुरूदो सलाम" के मा'ना हुए "दुरूदो सलाम की रोशनी"। मैं ने सय्यिदी क़ुत्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की निस्बत से इस रिसाले का नाम "ज़ियाए दुरूदो सलाम" रखा कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नाम का एक हिस्सा रिसाले में आ जाए। यूं "ज़ियाए दुरूदो सलाम" नाम रखने में दो फ़ाएदे हासिल हुए एक येह कि **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे और वलिय्युल्लाह की निस्बत हासिल हुई और दूसरा येह कि इस के मा'ना "दुरूदो सलाम की रोशनी" भी बिल्कुल ठीक हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/499)

सुवाल : किसी के घर बच्चा पैदा हुवा और उस ने क़ारी साहिब से कहा कि ऐसा नाम बताएं जो इस महल्ले या शहर में किसी ने न रखा हो, जवाब में उन्हों ने कहा कि फ़िरऔ़न या नमरूद नाम रख लो ! ऐसा कहना कैसा ?

जवाब : उन्हों ने ऐसा चोट या त़न्ज़ करने के लिये या मज़ाक़ में कहा होगा कि फ़िरऔ़न या नमरूद नाम ही हो सकता है जो किसी ने न रखा हो। इस त़रह़ का जवाब देने में मुम्किन है कि सामने वाले की दिल आज़ारी हो जाए, इस सूरत में मुआ़फ़ी मांगनी होगी। इस त़रह़ का जवाब नहीं देना चाहिये, क्यूं कि अगर सन्जीदा अन्दाज़ में ऐसा जवाब दिया तो भरोसा

नहीं कि कोई जा कर येह नाम रख भी ले। बहर ह़ाल Unique (मुन्फ़रिद) नाम रखने के बजाए अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم या दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَيۡہِم के नामों पर नाम रखने चाहिएं, इसी त़रह़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَيۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामों, जैसे मुह़म्मद, अह़मद या दीगर सिफ़ाती नामों में से कोई नाम रख लेना चाहिये, क्यूं कि येह नाम बरकत वाले होते हैं। अगर Unique (मुन्फ़रिद) नाम रखना ही है तो अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم के नामों में भी कई नाम ऐसे होते हैं जो मश्हूर नहीं होते, जैसे "जुल किफ़्ल और यूशअ़" (تفسیر روح البیان، پ 23، ص، تحت الآیۃ: 48، 8/47۔ تفسیر خازن، پ6، المائدۃ، تحت الآیۃ: 26، 1/483) येह अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام के नाम हैं, लेकिन मश्हूर नहीं हैं। ऐसे नाम किताबों से निकाल कर रखे जा सकते हैं। मक्तबतुल मदीना की किताब "नाम रखने के अह़काम" में भी सेंकड़ों नाम मौजूद हैं, उस में से तलाश कर के कोई नाम रख लिया जाए।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 60)

सुवाल : अक्सर लोग अपने बच्चों का नाम अ़ब्दुल जब्बार और अ़ब्दुर्रह़मान रखते हैं और फिर उन्हें अक्सरो बेश्तर रह़मान और जब्बार कह कर पुकारते हैं तो ऐसे नाम रख कर इस त़रह़ पुकारना कैसा है ?

जवाब : जिस का नाम अ़ब्द की इज़ाफ़त के साथ रखा गया उसे अ़ब्द के साथ ही पुकारना चाहिये। **अल्लाह** पाक के बा'ज़ नाम ऐसे हैं जो बिग़ैर अ़ब्द के नहीं रखे और पुकारे जा सकते। मक्तबतुल मदीना की किताब "नाम रखने के अह़काम" के सफ़ह़ा नम्बर 15 पर है : अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रह़मान बहुत अच्छे नाम हैं मगर इस ज़माने में येह अक्सर देखा जाता है कि बजाए अ़ब्दुर्रह़मान उस शख़्स को बहुत से लोग रह़मान कहते

हैं और ग़ैरे ख़ुदा को रह़मान कहना ह़राम है। इसी त़रह़ अ़ब्दुल ख़ालिक़ को ख़ालिक़[2] और अ़ब्दुल मा'बूद को मा'बूद कहते हैं इस क़िस्म के नामों में ऐसी ना जाइज़ तरमीम हरगिज़ न की जाए। इसी त़रह़ बहुत कसरत से नामों में तसग़ीर का रवाज है या'नी नाम को इस त़रह़ बिगाड़ते हैं जिस से ह़क़ारत निकलती है और ऐसे नामों में तसग़ीर हरगिज़ न की जाए लिहाज़ा जहां येह गुमान हो कि नामों में तसग़ीर की जाएगी येह नाम न रखे जाएं दूसरे नाम रखे जाएं। (बहारे शरीअ़त, 3/356, ह़िस्सा : 15, नाम रखने के अह़काम, स. 15, 16) तसग़ीर से मुराद घटाना और छोटा करना है जैसे रुपिये को रुपल्ली कहा जाता है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 61)

सुवाल : "फ़ातिह़ा ईमान" नाम रखना कैसा है ?

जवाब : फ़ातिह़ा का लफ़्ज़ शायद सूरए फ़ातिह़ा से लिया होगा और इस के साथ लफ़्ज़े "ईमान" को जोड़ लिया होगा, येह अ़जीबो ग़रीब और ना मुनासिब नाम है। मक्तबतुल मदीना की किताब "नाम रखने के अह़काम" ह़ासिल करें और उस में से कोई अच्छा सा नाम निकाल लें। येह किताब हर घर में होनी चाहिये ताकि जब भी कोई विलादत हो तो इस किताब में से नाम निकाल लिया जाए। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया :) "फ़ातिह़ा ईमान" का तरजमा बनेगा ईमान की फ़ातिह़ा। बहर ह़ाल इस नाम के जो भी मा'ना लेंगे वोह ईमान के साथ बेहतर नहीं लगेंगे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 75)

2... हमारे ज़माने में येह बला बहुत आ़म है कि अ़ब्दुर्रह़मान को रह़मान, अ़ब्दुल ख़ालिक़ को ख़ालिक़ और अ़ब्दुल क़दीर को क़दीर वग़ैरा कह कर पुकारते हैं येह ह़राम है, इस से बचना लाज़िम है।

(सिरात़ुल जिनान, पारह : 9, अल आ'राफ़, तह़्तल आयह : 180, 3/381)

सुवाल : ह़यातुल्लाह नाम रखना कैसा ? (सोशल मीडिया के ज़रीए सुवाल)

जवाब : जाइज़ है। (इस का मा'ना है : **अल्लाह** का ज़िन्दा किया हुवा।)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 62)

सुवाल : क्या बच्चे का नाम "मुह़म्मद ह़तीम" रख सकते हैं ?

जवाब : (इस मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) ह़तीम के मा'ना लफ़्ज़े "मुह़म्मद" के साथ मुनासिब मा'लूम नहीं हो रहे इस लिये कि साल की इब्तिदा में जो सूखी हुई घास होती है उसे और मल्बे को भी ह़तीम कहते हैं और लफ़्ज़े "ह़तमा" आ़म तौ़र पर तोड़ने के मा'ना में इस्ति'माल होता है। (इस पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इर्शाद फ़रमाया :) लफ़्ज़े मुह़म्मद लगाए बिग़ैर "ह़तीम" नाम रखने में ह़रज नहीं। एक सह़ाबी का नाम भी ह़तीम है और का'बे शरीफ़ के इर्द गिर्द के एक ह़िस्से को भी ह़तीम कहा जाता है बल्कि "ह़तीम" ऐने का'बा ही है कि दौराने ता'मीर ख़र्च की कमी के बाइ़स इस ह़िस्से को छोड़ दिया गया था। (بخاری، 1/533، حدیث: 1584) तो यूं येह दो निस्बतें हो गईं लिहाज़ा निस्बत से बरकत ह़ासिल करने के लिये ह़तीम नाम रख सकते हैं मगर इस के साथ लफ़्ज़े मुह़म्मद मिलाना मुनासिब नहीं है। अगर किसी ने "मुह़म्मद ह़तीम" नाम रखा तो हम इसे ना जाइज़ और नाम रखने वाले को गुनाहगार नहीं कहेंगे, अलबत्ता लफ़्ज़े मुह़म्मद उसी नाम के साथ लगाया जाए जो इस के शायाने शान हो जैसे ह़सन वग़ैरा। "हसन" की तसग़ीर के साथ भी लफ़्ज़े "मुह़म्मद" लगाना मुनासिब नहीं मगर हमारे यहां लगाने का उ़र्फ़ है यहां तक कि उ़लमा भी लगाते हैं। बहर ह़ाल अगर किसी ने ह़सन की तसग़ीर के साथ भी लफ़्ज़े

"मुहम्मद" लगाया तो वोह गुनाहगार नहीं मगर मेरा येह जवाब फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ और सरकार मुफ़्तिये आ'ज़म हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इर्शादात की रोशनी में है।

(जहाने मुफ़्तिये आ'ज़म, स. 452, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 87)

सुवाल : नामे मुहम्मद की क्या बरकतें हैं ?

जवाब : سُبْحٰنَ اللهِ ! नामे मुहम्मद की बरकतों के क्या कहने ! **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस का नाम तुम्हारे नाम पर होगा (या'नी मुहम्मद या अहमद होगा) तो मैं उसे अ़ज़ाब नहीं दूंगा। (مواہب لدنیہ، 2/301) प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस का नाम अहमद या मुहम्मद हो वोह दोज़ख़ में नहीं जाएगा।

(مسند فردوس، 2/503، حدیث:8515, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 83)

जो चाहते हो कि हो सर्द आतशे दोज़ख़ दिलों पे नक़्श मुहम्मद का नाम कर लेना

सुवाल : बच्ची का नाम "अ़ज्वा" रखना कैसा है ?

जवाब : "अ़ज्वा" मदीनए पाक बल्कि दुन्या की सब से आ'ला खजूर है, इस निस्बत से नाम रखने में कोई ह़रज नहीं है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 102)

सुवाल : मुह़र्रमुल ह़राम में पैदा होने वाले बच्चे का मुह़र्रमुल ह़राम की निस्बत से कोई अच्छा सा नाम बता दीजिये।

जवाब : मैं ने आज तक किसी को बुरा नाम बताया ही नहीं है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मेरी येह आ़दत है कि मैं अच्छों में अच्छा नाम बताता हूं क्यूं कि जब मैं किसी की बुराई चाहता ही नहीं तो उसे बुरा नाम क्यूं दूंगा ? ज़ियादा तर येही है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं लड़के का नाम मुहम्मद रखता हूं या कभी अहमद रखता हूं क्यूं कि इन दोनों नामों के बड़े फ़ज़ाइल हैं और जो ता'ज़ीम और

बरकत के लिये येह नाम रखे तो नाम रखने वाले के लिये मग़्फ़िरत की बिशारत है। (کنز العمال، جزء16، 8/175، حدیث:45215 ماخوذا) इसी त़रह़ पुकारने के लिये भी मैं अच्छा ही नाम देता हूं। चाहे मुह़र्रमुल ह़राम हो या बक़र ईद हो या रमज़ानुल मुबारक हो, मेरी त़रफ़ से अच्छा ही नाम दिया जाता है और इस लिह़ाज़ से मुह़र्रमुल ह़राम की कोई ख़ुसूसिय्यत नहीं कि मैं मुह़र्रमुल ह़राम में तो अच्छा नाम दूं और बाक़ी महीनों में बुरा। बच्चों का नाम अच्छा ही रखना चाहिये कि अच्छा नाम अच्छी फ़ाल और अच्छी निशानी है और जिस का अच्छा नाम रखा जाएगा उस के साथ اِنْ شَآءَاللہ अच्छाई होगी मगर आज कल लोग مَعَاذَاللہ फ़िल्म एक्टरों, क्रिकेटरों और फ़न्कारों के नाम पर बच्चों के नाम रखना पसन्द करते हैं। इसी त़रह़ लोग Unique (मुन्फ़रिद) नाम रखने की भी भरपूर कोशिश करते हैं और जैसा भी Unique (मुन्फ़रिद) नाम सामने आए रख देते हैं ह़ालां कि ऐसा नहीं होना चाहिये बच्चों के नाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم और औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَيْہِم के नामों पर रखे जाएं। आज कल लोग यासीन और त़ाहा नाम रखते हैं, इस त़रह़ के नाम रखने की भी इजाज़त नहीं क्यूं कि येह हुरूफ़े मुक़त्त़आ़त हैं जिन के मा'ना **अल्लाह** पाक जानता है और उस के बताने से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ عَلَيْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जानते हैं, हमें इन के मा'ना मा'लूम नहीं इस लिये येह नाम नहीं रख सकते, हां ग़ुलाम यासीन और ग़ुलाम त़ाहा नाम रखे जा सकते हैं।

बाक़ी रहा येह कि मैं मुह़र्रमुल ह़राम की निस्बत से कोई अच्छा सा नाम बताऊं तो इस के लिये नाम पूछने वाले का तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार होना और मदनी फ़ीस देना ज़रूरी है। अगर मैं बिग़ैर किसी शर्त़ के नाम

दूंगा तो इतने लोग नाम पूछेंगे कि संभालना मुश्किल हो जाएगा। पहले मेरे पास नाम लेने के लिये पूरी पूरी लिस्टें आया करती थीं और यूं लोग मुझे खाने देते थे न पीने, फिर मैं ने नाम देने के लिये पाबन्दियां लगाईं कि अगर तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारियां हों तो नाम पूछें वरना नहीं और येह शर्त लगाई कि मुझ से नाम लेने के लिये कम अज़ कम ज़ैली ह़ल्क़े का निगरान होना ज़रूरी है। अब भी नाम लेने के लिये मुझ से कहा जाता है कि नाम बता दीजिये कि नाम पूछने वाला मदनी काम बहुत करता है, अगर्चे उस के घर के सारे अफ़राद बे नमाज़ी हों और ह़क़ीक़त में वोह बद अख़्लाक़ियों का मज्मूआ़ हो मगर नाम लेने के लिये उसे फ़ज़ीलतों का मज्मूआ़ बना दिया जाता है।

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना ने एक किताब बनाम "नाम रखने के अह़काम" शाएअ़ की है, इस किताब में सेंकड़ों बल्कि हज़ारों नाम दिये गए हैं लिहाज़ा इस में से नाम मुन्तख़ब कर के रखे जा सकते हैं। नीज़ इस किताब में नामों के साथ साथ ज़रूरी मसाइल और जिन नामों को रखना मन्अ़ है उन की निशान देही भी की गई है। येह किताब हर घर की ज़रूरत है क्यूं कि आ़म तौ़र पर सब के यहां बच्चे पैदा होते हैं। इस किताब में नामों के साथ उन के मा'ना भी लिख दिये गए हैं, अपने नामों के मआ़नी भी देखे जा सकते हैं। येह सिर्फ़ मुफ़ीद नहीं बल्कि एक मुफ़ीद तरीन किताब है लिहाज़ा इस किताब को मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के अपने घरों में ज़रूर रखा जाए।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 127)

सुवाल : बच्ची का नाम "वन्नास" रखना कैसा है ?

जवाब : ''वन्नास'' नाम रखना जाइज़ है कि इस का मा'ना बुरा नहीं है। ''वन्नास'' के मा'ना हैं ''और इन्सान'' अगर किसी ने शरारत में ख़न्नास बोलना शुरूअ़ कर दिया तो मा'ना पता होने की सूरत में झगड़ा हो जाएगा वरना समझेंगे कि ख़न्नास नाम भी अच्छा है और इस त़रह़ किसी से सुन कर कोई ख़न्नास नाम रख भी ले तो तअ़ज्जुब नहीं। ''वन्नास'' अगर्चे क़ुरआने पाक का लफ़्ज़ ज़रूर है मगर जो लफ़्ज़ क़ुरआने पाक में आया उस का नाम ही रख लिया जाए येह ज़रूरी नहीं क्यूं कि क़ुरआने पाक में तो इब्लीस, फ़िरअ़ौन और शैत़ान का लफ़्ज़ भी आया है। बच्चियों के नाम पाक बीबियों, सह़ाबियात, वलिय्यात और जो बुज़ुर्ग ख़वातीन गुज़री हैं उन के नामों पर रखना अच्छा है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 127)

सुवाल : शहन्शाह और बादशाह नाम रखना कैसा ?

जवाब : ख़ुद अपना नाम तकब्बुर और बड़ाई की निय्यत से शहन्शाह या बादशाह रखना मन्अ़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/30 माख़ूज़न) अगर तकब्बुर की निय्यत नहीं जैसा कि लोगों की मा'ना पर नज़र नहीं होती और ऐसा नाम रख लेते हैं तो फिर वोह मुमानअ़त नहीं रहेगी। अलबत्ता बचना अब भी अच्छा है क्यूं कि इस में ख़ुद सिताई या'नी अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनना पाया जा रहा है। मौजूदा दौर में ख़ुद सिताई वाले नाम इस क़दर ज़ियादा हैं कि तक़रीबन हर दूसरा नाम अपनी ता'रीफ़ वाले मा'ना पर मुश्तमिल होता है मसलन बा'ज़ लोग शहज़ाद या शहज़ादा नाम रखते हैं जिस के मा'ना हैं : बादशाह का बेटा, अब बाप भले क़र्ज़ों में डूबा हुवा हो लेकिन बेटे का नाम शहज़ाद है। बा'ज़ लोगों का नाम आ़बिद होता है जिस के मा'ना हैं : इबादत गुज़ार, अब भले वोह जुमुआ़ की नमाज़ भी न पढ़ता

हो लेकिन नाम आ़बिद है। ज़ाहिद नाम रखते हैं जिस के मा'ना हैं : दुन्या से बे रग़बत, अब होता पूरा दुन्यादार है लेकिन कहलाता ज़ाहिद है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 129)

सुवाल : शहन्शाह और बादशाह और इस त़रह़ के बड़ाई वाले दीगर अल्क़ाबात बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के साथ क्यूं लगाए जाते हैं ?

जवाब : अगर लोग किसी को शहन्शाह या बादशाह बोलें तो इस में ह़रज नहीं जैसा कि बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को इस त़रह़ के अल्क़ाबात लोगों की त़रफ़ से दिये गए हैं मसलन शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه। इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के वोह शहज़ादे जो करबला में बीमारी के सबब जंग में ह़िस्सा नहीं ले पाए थे और वाक़िअ़ए करबला के बा'द बरसों ज़ाहिरी ह़यात के साथ ज़िन्दा रहे। इन के अल्क़ाबात "सज्जाद या'नी बहुत ज़ियादा सज्दे करने वाला" और "ज़ैनुल आ़बिदीन या'नी इबादत गुज़ारों की ज़ीनत" हैं। चूंकि आप رَضِیَ اللهُ عَنْه बहुत ज़ियादा नफ़्ल नमाज़ पढ़ा करते थे इस लिये लोगों ने येह अल्क़ाबात आप को दिये वरना आप رَضِیَ اللهُ عَنْه का अस्ल नाम "अ़ली औसत़" है। पुरानी किताबों में भी "अ़ली बिन ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا" कर के ही नाम मिलेगा। बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللهُ عَنْه को सज्जाद और ज़ैनुल आ़बिदीन कहना बिल्कुल दुरुस्त है। आ़म लोगों के जो येह नाम रखे जाते हैं तो इस में ख़ुद सिताई पाई जाती है। पन्ज वक़्ता नमाज़ तो पढ़ता नहीं और कहला रहा है : "सज्जाद या'नी बहुत ज़ियादा सज्दे करने वाला", जुमुआ़ की नमाज़ तक पढ़ता नहीं और नाम है : "ज़ैनुल आ़बिदीन या'नी इबादत गुज़ारों की ज़ीनत।" "ग़ुलाम ज़ैनुल आ़बिदीन" नाम रखें तो

चल जाएगा लेकिन ज़ैनुल आ़बिदीन नाम रखने में ख़ुद सिताई पाई जा रही है। ज़ियादा बेहतर येह है कि हुसूले बरकत के लिये बुज़ुर्गों के नाम पर नाम रखे जाएं। अगर कोई ख़ुद को सज्जाद, शहज़ाद और शहज़ादा वग़ैरा कहलवाता है तो उस से उलझना नहीं। बा'ज़ लोग अपने बेटे का तआ़रुफ़ शहज़ादा या साहिब ज़ादा कह कर करवाते हैं, गुनाह इस में भी नहीं है लेकिन ख़ुद सिताई से बचने के लिये बेहतर है कि न कहा जाए। मैं तो अपने बेटे को ग़रीब ज़ादा बोलता हूं या'नी ग़रीब का बेटा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 129)

सुवाल : "मुह़म्मद अज़ान", "मुह़म्मद सुब्ह़ान" और "मुह़म्मद सब्र" नाम रखना कैसा ?

जवाब : अज़ान के साथ लफ़्ज़े "मुह़म्मद" का कोई जोड़ नहीं, येह नाम रखना अगर्चे ना जाइज़ व गुनाह नहीं है, लेकिन येह एक इ़बादत का नाम है, लिहाज़ा येह नाम रखना मुनासिब नहीं, अगर किसी ने रख लिया है तो उस के साथ लफ़्ज़े "मुह़म्मद" शामिल न किया जाए। इसी त़रह़ "मुह़म्मद सुब्ह़ान" नाम न रखा जाए, बल्कि "अ़ब्दुस्सुब्ह़ान" रखा जाए।[3] नीज़ "मुह़म्मद सब्र" के बजाए "मुह़म्मद साबिर" नाम रखना चाहिये कि सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर साबिर कौन हो सकता है ? जब कि सब्र एक सिफ़त है। (इस मौक़अ़ पर मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) सब्र साबिर के मा'ना में भी बोला जा सकता है, जिस का मत़लब होगा :

3... सुब्ह़ान नाम रखना जाइज़ नहीं है क्यूं कि येह सिफ़त सिर्फ़ **अल्लाह** पाक के साथ ही ख़ास है और जो सिफ़त **अल्लाह** पाक के साथ ख़ास हो मख़्लूक़ पर उस का इ़त्लाक़ दुरुस्त नहीं, कभी ना जाइज़ व गुनाह और कभी कुफ़्र की ह़द तक भी पहुंच जाता है।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

''बहुत ज़ियादा सब्र करने वाला।'' अ़रबी क़ाइ़दा है कि मुबालग़े के लिये ऐसी सिफ़ात को मस्दर लाया जाता है, अलबत्ता ! ऐसे नाम हमारे यहां मश्हूर नहीं हैं, लिहाज़ा ऐसे नाम नहीं रखने चाहिएं।

(अमीरे अहले सुन्नत ने फ़रमाया :) दर अस्ल मस्अला येह है कि लोग Unique नाम रखना पसन्द करते हैं। हम ने ''अज़ान'' नाम रखने से मन्अ़ किया है तो लोग अपनी धुन में ''तक्बीर'' या ''इक़ामत'' नाम रख देंगे ! ह़त्ता कि Unique नाम रखने का इतना शौक़ है कि एक अख़्बार के मुत़ाबिक़ किसी ने अपने बच्चे का नाम ही ''कोरोना'' रखा है ! बहर ह़ाल फ़ी ज़माना वोही नाम पसन्द किया जाता है जिस में लोग तअ़ज्जुब करें, उस के मा'ना पूछें। याद रखिये ! वोह Unique नाम रखने में कोई ह़रज नहीं, जिस के मा'ना अख़्लाक़ी और शर्ई ए'तिबार से बुरे न हों। बेहतर येह है कि जो नाम अह़ादीसे मुबारका में आए हों या हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक नाम पर हों, मसलन मुह़म्मद या अह़मद नाम रखे जाएं। मक्तबतुल मदीना की किताब ''नाम रखने के अह़काम'' में नामों की त़वील फ़ेहरिस्त मौजूद है, येह किताब मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल करें, या दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से डाउन लोड करें और उस से बच्चों के नामों का इन्तिख़ाब करें।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 156)

सुवाल : क्या रमला नाम रख सकते हैं ?

जवाब : रमला नाम रख सकते हैं कि कई सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ का नाम रमला है मगर बरकत तब ही मिलेगी कि जब इस निय्यत से नाम रखेंगे कि इस में सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ से निस्बत है। बहर ह़ाल अपने बच्चों

के नाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم के नाम पर रखें और बच्चियों के नाम सालिह़ात, वलिय्यात और नेक बीबियों के नाम पर रखें कि इस से बरकत होती है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 91)

सुवाल : मैं ने अपने मदनी मुन्ने का अस्ल नाम मुह़म्मद रखा है और पुकारने के लिये वासिफ़ रज़ा, अब क्या वासिफ़ रज़ा से पहले मुह़म्मद लगा सकता हूं।

जवाब : अगर बरकत की निय्यत से "मुह़म्मद" नाम रखा तो बहुत फ़ज़ीलत वाला काम किया। वासिफ़ रज़ा का मा'ना है : रज़ा की ता'रीफ़ करने वाला। अब यहां येह देखा जाएगा कि मुह़म्मद रज़ा, की ता'रीफ़ करते हैं, इस लिये एह़तियात़ इसी में है कि वासिफ़ रज़ा अलग से पुकारा जाए। मुह़म्मद वासिफ़ रज़ा न कहना मुनासिब है और अगर कहा तो कोई ह़रज या गुनाह भी नहीं है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 30)

सुवाल : क्या जाने आ़लम नाम रख सकते हैं ?

जवाब : **अल्लाह** पाक के सिवा जो कुछ भी है उसे आ़लम कहते हैं और इन सब की जान या'नी प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जाने आ़लम कहा जाता है। (इस मौक़अ़ पर मदनी मुज़ाकरे में शरीक मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया :) आ़म तौ़र पर जाने आ़लम, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बोला जाता है और जाने आ़लम नाम रखना ग़ालिबन मुसल्मानों में राइज भी नहीं है, नीज़ इस नाम में तज़्किया या'नी अपने नफ़्स की बड़ाई बयान करना भी पाया जा रहा है लिहाज़ा ऐसा नाम नहीं रखना चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, 3/604, ह़िस्सा : 16, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/242)

सुवाल : मैं ने बेटी का नाम उम्मुल क़ुरा रखा है तो क्या येह नाम रखना सह़ीह़ है ?

जवाब : बच्ची का नाम ''उम्मुल क़ुरा'' रखने में कोई ह़रज नहीं है। मक्कए मुकर्रमा का एक नाम ''उम्मुल क़ुरा'' भी है।

(بخاری، 3/296، حدیث:4772) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/457)

सुवाल : मेरे घर बेटी की विलादत हुई है, क्या मैं उस का नाम ''मश्अ़ल'' रख सकता हूं ? इस का मा'ना भी बता दीजिये। (SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : मश्अ़ल आग की होती है और येह अच्छी चीज़ है, बुरी चीज़ नहीं है जैसे ''मश्अ़ले राह'' कहा जाता है, या'नी रास्ता दिखाने वाली रोशनी। ''मश्अ़ल'' नाम रखना शर्अ़न जाइज़ है, लेकिन लड़कियों के नाम वोह रखने चाहिएं जो सह़ाबियात, वलिय्यात और सालिह़ात या'नी नेक बन्दियों के नाम हों, ऐसे नाम बाइसे बरकत होते हैं। मश्अ़ल से आग भी तो लग सकती है, ख़त़रा मौजूद है। इस लिये वोह नाम रखें जिस में ख़त़रा न हो। Peaceful (पुर अम्न) नाम रखें, सब सह़ाबियात के नाम Peaceful हैं। ह़ुसूले बरकत की निय्यत से रखेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ बरकत भी मिलेगी। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 90)

सुवाल : क्या अ़ब्दुल ह़रीर नाम रख सकते हैं ? (इस्लामी बहन का सुवाल)

जवाब : ह़रीर के मा'ना रेशम के हैं तो अ़ब्दुल ह़रीर के माना हुए रेशम का बन्दा, बस येह Unique (मुन्फ़रिद) नाम के चक्कर में रख दिया होगा। अगर अ़ब्दुल ह़रीर की जगह कोई और नाम रखना हो तो अ़ब्दुल क़दीर नाम रख सकते हैं लेकिन इस में मस्अला येह है कि लोग अ़ब्द हटा कर सिर्फ़ क़दीर बोलना शुरूअ़ कर देते हैं और **अल्लाह** पाक के सिवा

किसी को क़दीर बोलना ना जाइज़ व गुनाह है कि येह **अल्लाह** पाक की सिफ़त है । (फ़तावा मुस्तफ़विय्या, स. 89, 90 मुलख़्ख़सन) नसीर नाम रख सकते हैं कि बन्दे को नसीर कहने में ह़रज नहीं है। इसी त़रह़ जरीर नाम भी रख सकते हैं कि येह एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का नाम है ।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 99)

सुवाल : मैं ने अपनी बेटी का नाम "निस्वां" रखना है येह नाम ठीक है या नहीं ?

जवाब : इस की कोई फ़ज़ीलत नहीं है मगर येह नाम रखा तो गुनाहगार भी नहीं होगा । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 59)

सुवाल : क्या हम प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कुन्यत "अबुल क़ासिम" को अपने बच्चों के नाम के त़ौर पर रख सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! "अबुल क़ासिम" नाम रखना जाइज़ है ।

(फ़तावा रज़विय्या, 16/560) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 217)

❊❊ ❊❊ ❊❊ ❊❊ ❊❊ ❊❊ ❊❊

नोट

सफ़ह़ा 1, 15 के सुवालात और सफ़ह़ा 4 का आख़िरी सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की त़रफ़ से क़ाइम किये गए हैं अलबत्ता जवाबात अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के ही अ़त़ा कर्दा हैं ।

महब्बत बढ़ाने का सबब

हज़रते उस्मान बिन तल्हा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : तीन चीज़ें तुम्हारे भाई के दिल में तुम्हारी सच्ची महब्बत का बाइस बनेंगी :

(1) जब तुम उस से मिलो तो सलाम करो (2) मजलिस में उस के लिये फ़राख़ी और वुस्अ़त पैदा करो, और (3) उसे उस के पसन्दीदा नाम से बुलाओ।

(جمع الجوامع، 141/4، حدیث: 10814)